The Divine Love

परमात्म स्नेह के फायदे

AM 18.01.18
(Recorded 18.01.2008)

बापदादा सभी बच्चों को आज के

✓ स्नेह के दिन,
✓ स्मृति के दिन,
✓ समर्थी के दिन की

विशेष दिल की दुआयें और दिल की बधाईयां दे रहे हैं।
आज का विशेष दिन स्नेह का होने कारण मैजारिटी स्नेह में खोये हुए हैं।

ऐसे ही पुरूषार्थ में सदा स्नेह में खोये हुए रहो।

1. **लवलीन रहो तो सहज साधन है स्नेह,दिल का स्नेह।**

✓बाप के परिचय की स्मृति सहित स्नेह।
✓बाप के प्राप्तियों के स्नेह सम्पन्न स्नेह।

स्नेह बहुत सहज साधन है क्योंकि स्नेही आत्मा मेहनत से बच जाती है।

2. स्नेह में लीन होने के कारण, स्नेह में खोये हुए होने के कारण **किसी भी प्रकार की मेहनत मनोरंजन के रूप में अनुभव होगी।**

3. स्नेही **स्वत: ही देह के भान, देह के सम्बन्ध का ध्यान, देह की दुनिया के ध्यान से ऊपर स्नेह में स्वत: ही लीन रहती।**

4. दिल का स्नेह **बाप के समीप का, साथ का, समानता का अनुभव कराता है।**

5. स्नेही **सदा अपने को बाप की दुआओं के पात्र समझते हैं।**

6. स्नेह **असम्भव को भी सहज सम्भव** कर देता है।

7. सदा **अपने मस्तक पर माथे पर बाप के सहयोग का, स्नेह का हाथ अनुभव करते हैं।**

8. **निश्चयबुद्धि, निश्चिंत** रहते हैं।

9. **Eg :-**
आप सभी आदि स्थापना के बच्चों को आदि के समय का अनुभव है, अभी भी सेवा के आदि निमित्त बच्चों को अनुभव है कि आदि में सभी बच्चों को बाप मिला, उस स्मृति से स्नेह का **नशा** कितना था!

नॉलेज तो पीछे मिलती लेकिन पहला-पहला नशा स्नेह में खोये हुए हैं।

बाप स्नेह का सागर है तो मैजारिटी बच्चे आदि से स्नेह के सागर में खोये हुए हैं, **पुरूषार्थ की रफ्तार में बहुत अच्छे स्पीड से चले हैं।**

1. लेकिन कोई बच्चे स्नेह के सागर में खो जाते हैं,
2. कोई सिर्फ डुबकी लगाके बाहर आ जाते हैं।

इसीलिए जितना खोये हुए बच्चों को मेहनत कम लगती उतनी उन्हों को नहीं।
कभी मेहनत, कभी मुहब्बत, दोनों में रहते हैं।

10) लेकिन जो स्नेह में लवलीन रहते हैं वह **सदा अपने को छत्रछाया के अन्दर रहने का अनुभव करते हैं।**

(2. दिल के स्नेही बच्चे **मेहनत को भी मुहब्बत** में बदल लेते हैं। Eg : उन्हों के आगे पहाड़ जैसी समस्या भी पहाड़ नहीं लेकिन रूई समान अनुभव होती है। पत्थर भी पानी समान अनुभव होता है।)

तो जैसे आज विशेष स्नेह के वायुमण्डल में रहे तो अनुभव किया मेहनत है या मनोरंजन हुआ!